शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संगीत वाद्य हारमोनियम के विभिन्न प्रकार

विजय गोथरवाल (शोधार्थी)
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

दुनिया के प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं : ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेदा सामवेद से भारतीय गायन-वादन की निष्पत्ति हुई है। भारत की विभिन्न प्रकार की विविधताओं के सामन ही यहाँ गायन, वादन और नृत्य की अनेक शैलियाँ पूर्ण विकसित रूप में पायी जाती हैं कलाओं को प्रस्तुत करने के लिए अनेक प्रकार के वाद्य यंत्रों की रचना हुई। भारत की समन्वय की संस्कृति ने विदेशी वाद्य यंत्र को भी अपना बना लिया। उस वाद्य यन्त्र में हारमोनियम मुख्य है। इसे पेटी बाजा के नाम से भी जाना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हारमोनियम के विभिन्न प्रकारों पर विचार किया गया है।

भूमिका

संपूर्ण विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश हैं, जहाँ भाषा, भूषा व भोजन में अनेक प्रकार की विविधता पायी जाती है। भारत कला, संस्कृति एवं प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। प्राचीन काल के ऋषी-मुनि और विद्वानों ने 64 प्रकार की कलाओं का विवरण अनेक ग्रंथों में दिया है, जिसमें से संगीत भी एक कला है। गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों से मिलकर संगीत बनता है। इन तीनों विधाओं का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है जिसमें वादन के अन्तर्गत अनेक वाद्यों का समावेश होता है। जिस तरह अनेक प्रकार के फूलों से मिलकर एक गुलदस्ता बनता है, ठीक उसी प्रकार अलग-अलग वाद्यों से मिलकर भारतीय संगीत अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँचता है। भारतीय संगीत में वाद्य की उत्पत्ति के संबध में विद्वानों के कई मत, किवदंतियाँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार 'वीणा नाम समुद्रोत्थितं रत्नम्'[1] अर्थात् वीणा का निर्माण शिव ने पार्वती की शयन-मुद्रा को देखकर उसके आधार पर किया। एक अन्य मत के अनुसार शिव ने त्रिपुरासुर-विजय पर नृत्य किया। उस नृत्य की संगति हेतु ब्रह्माजी जी ने एक अवनद्ध वाद्य की रचना की। इस प्रकार अनेक मत भारतीय संगीत में प्रचलित हैं।

'चतुर्विधं तच्च ततमानद्ध सुषिर घनं।'[2]

भारतीय संगीत के वाद्यों को चार वर्गों में बांटा गया है : तत्, घन, अवनद्ध, सुषिर। **तत्** - जो तार वाद्य हो, **घन** - ऐसे वाद्य, जो ठोकर लगाकर या ठोककर बजाये जाते हों, **अवनद्ध** - जो वाद्य, अन्दर से पोले तथा चमड़े से मढ़े होते हैं, हाथ या अन्य किसी वस्तु के प्रयोग से बजते हों, **सुषिर** - ऐसे वाद्य, जो हवा के माध्यम से बजते हों। उपर्युक्त चार श्रेणियों में अनेक वाद्य आते हैं। सुषिर वाद्य की श्रेणी में हारमोनियम वाद्य आता है, जो वर्तमान समय में प्रत्येक सांगीतिक सभा में देखा जा सकता है।

भारतीय संगीत में हारमोनियम

'हारमोनियम का आविष्कार 9 अगस्त 1840 ई. में एलेक्जेंडर डेबेन ने किया।'[3] भारत में

हारमोनियम का आगमन 1960 में हुआ था। उस समय यह वाद्य पैर पेटी के रूप में था, जो भारतीय संगीत के अनुरूप नहीं था। आवश्यकतानुसार 'कलकत्ता के द्वारकानाथ घोष जी ने इसका स्वरूप बदला। फलस्वरूप पैर की धौंकनी हाथ पर आ गई।'[4] इसके साथ ही इस वाद्य को बजाने वाले अनेक कलाकार हो गये तथा सभी कलाकारों ने इस वाद्य को सम्मान दिलाने व भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्थान दिलाने में बहुत योगदान दिया, उसमें भैय्या गणपतराव का नाम सर्वोपरी है।

पख़ावज, तबला वाद्य जैसा हारमोनियम का कोई स्वतंत्र शास्त्र या ग्रंथ तो नहीं होता है, परंतु गायन के क्रियाकलापों तथा गायक के अनुसरण के साथ यह वाद्य यंत्र अत्यधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। इसका वादन करना अत्यंत सरल व सुगम होने के कारण प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए यह वाद्य एक आदर्श वाद्य यंत्र बन गया है। शीघ्रता से इस वाद्य यंत्र मे दक्ष होने के कारण भारत मे हारमोनियम वादकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है जो हारमोनियम जगत के लिए शुभ संकेत है। गायन के क्रियाकलाप जैसे - खटका, गमन, मुर्की तथा काकूभेद का प्रयोग गायन के साथ-साथ हारमोनियम वादन में भी किया जाने लगा है।

वर्तमान समय में हारमोनियम वाद्य के जितने भी प्रकार भी सामने आये हैं, लगभग सभी प्रकारों को द्वारकानाथ घोष ने बनाया है। वर्तमान में हमारे सामने सादा, फोल्डिंग, कपलर, स्केल चेंजर तथा 22 श्रुति आदि हारमोनियम के प्रकार मुख्यतः देखने को मिलते हैं। इन प्रकारों के अन्यत्र भी कलाकारों एवं हारमोनियम निर्माताओं के द्वारा हारमोनियम के प्रकार आवश्यकतानुसार बनाये जा रहे हैं।

सादा हारमोनियम से आशय यह है कि ऐसे हारमोनियम जो संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को सिखाने हेतु काम में लाये जाते हैं, जिनमें अन्य प्रकार की सुविधाएं जैसे - कपलर, स्केल चेंज, फाल्डिंग आदि की सुविधा नहीं होती है। इस प्रकार के हारमोनियम की गुणवत्ता कुछ विशेष नहीं होती है, इस कारण इसका प्रयोग केवल हारमोनियम वाद्य को सिखाने हेतु किया जाता है। सादा हारमोनियम को बनाने में कई प्रकार की लकड़ी का उपयोग किया जाता है। सादा हारमोनियम तीन से पौने चार सप्तक के हो सकते हैं। इस प्रकार के हारमोनियम में तीन से पाँच स्टापर लगे होते हैं, जो रीड की लाइनों को बजाने में सहायक होते हैं। इसके साथ दो या तीन स्टापर स्थायी सुर देने के लिए होते हैं।

फोल्डिंग हारमोनियम को नाम के अनुरूप फोल्ड किया जा सकता है अर्थात् यात्रा के दौरान या वादन पूर्ण होने के बाद इसका आकार छोटा कर लिया जाता है। इस प्रकार के हारमोनियम को अनेक कलाकारों व निर्माताओं द्वारा नवीन रूप प्रदान किया गया है। ऐसे ही एक विशिष्ट प्रकार का फोल्डिंग हारमोनियम मालवा के लोकनाट्य के गुरू व हारमोनियम निर्माता पण्डित ओमप्रकाश शर्मा ने तैयार किया है।

कपलर हारमोनियम सादे हारमोनियम की भाँति ही दिखाई देते हैं, परंतु इस हारमोनियम में कपलर लगा होता है, जिसका मुख्य कार्य एक स्वर को दबाने पर समानान्तर एक अन्य स्वर को बजना होता है। कपलर दो प्रकार के हो सकते हैं :

1 जिसमें एक सप्तक नीचे के स्वर बजते हों।

2 जिसमें एक सप्तक ऊपर के स्वर बजते हों।

जैसा कि नाम से ही ज्ञात हो जाता है कि स्केल चेन्जर यानी वह हारमोनियम जिसमें स्वरों को

बदला जा सकता हैं। दिखाई देने में यह हारमोनियम अन्य हारमोनियम की भाँति ही प्रतीत होता है, परंतु स्केल चेंजर हारमोनियम फोल्डिंग व कपलर होता है। कुछ चेन्जर हारमोनियम सादे भी होते हैं, जिन्हें फोल्ड नहीं किया जा सकता। स्केल चेन्जर हारमोनियम में रीड की लाइन अधिक होती है अर्थात् कम से कम तीन या अधिकतम चार लाइनें होती हैं। अधिक लाइनें उपयोग करने से हारमोनियम की आवाज प्रभावशाली व मीठी हो जाती है, जो कलाकार की माँग के अनुसार हो सकती है। मुख्यतः स्केल चेंजर की तीन लाइनें नर-नर-खरज़ तथा नर-खरज़-मादा या चार लाइन में नर-नर-खरज़-मादा तथा नर-खरज़-खरज़-मादा आदि प्रकार से हो सकती है। इस हारमोनियम में स्वरों को बदलने की क्षमता होती है। स्वरों को बदलने का अर्थ रीड को बदलना नहीं है। स्केल चेन्ज करने के लिए इस हारमोनियम में आगे की तरफ एक नॉब होती है। जैसे हमें C (सफेद एक) को B (सफेद सात) पर लेकर जाना है तो आगे दी हुई नॉब को दाँयी ओर एक गाला आगे बढ़ाने पर की-बोर्ड नीचे की ओर बढ़ जाता है। फलस्वरूप C (सफेद एक) ^की* B (सफेद सात) पर आ जाती है।

श्रुति हारमोनियम का आविष्कार डॉ.विद्याधर ओक द्वारा किया गया जो उनके वर्षों के शोध का परिणाम है। श्रुति हारमोनियम अन्य साधारण हारमोनियम जैसी ही होती है। इसमें अन्य हारमोनियम की भाँति एक सप्तक में 12 स्वर दिखाई देते हैं, परन्तु 10 अन्य स्वर (श्रुति) छुपे हुऐ रहते हैं। कहने का तातपर्य यह है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में 22 श्रुतियाँ बताई गयी हैं, जो विभिन्न रागों में उपयोग की जाती हैं। ये श्रुतियाँ अन्य साधारण हारमोनियम में नहीं होती हैं। भारतीय संगीत में ^सा* ^प* अचल होते हैं तथा अन्य स्वर चल होते हैं। प्रत्येक स्वर (कोमल, शुद्ध) की दो श्रुतियाँ होती हैं, जो श्रुति हारमोनियम में बजाई जाती है।

हारमोनियम में प्रत्येक स्वर के नीचे एक नॉब होती है, जिसे बाहर की तरफ खींचने पर उस स्वर की ऊतरी (Lower) श्रुति व बन्द करने पर चढ़ी (Higher) श्रुति बजती है। इस वाद्य में प्रत्येक स्वर की दो श्रुतियाँ होती हैं, जैसे- "कोमल ऋषभ की ऊतरी श्रुति (अति कोमल) तथा चढ़ी श्रुति, शुद्ध ऋषभ की ऊतरी श्रुति तथा चढ़ी श्रुति। इस प्रकार ^सा* और ^प* को छोड़कर प्रत्येक स्वर की दो श्रुतियाँ होती हैं।"[5] श्रुतियाँ तीन प्रकार की होती हैं - प्रमाण श्रुति, न्यून श्रुति, तथा पूर्ण श्रुति।

निष्कर्ष

हारमोनियम के उपर्युक्त प्रकारों के अलावा अनके प्रकार के हारमोनियम का निर्माण आने वाले समय में होगा, ऐसा कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हारमोनियम एक पाश्चात्य् वाद्य होने के बाद भी भारतीय संगीत व संगीतकारों द्वारा इसे आत्मसात कर लिया गया है मानो यह भारतीय मूल का ही वाद्य है। हारमोनियम का स्तर भारतीय संगीत में धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है। इसकी वादन-विधि, बनावट तथा आवगमन की सुलभता के कारण हारमोनियम वाद्य संगीत सभाओं तथा बड़े समारोह की शोभा बनता जा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 संगीत में गायन एवं वादन का अन्तर्निहित सम्बन्ध, डॉ. सुमिता चक्रवर्ती, पृष्ठ क्र. 38

2 उत्तर भारतीय संगीत में तन्त्रवाद्यों का स्थान एवं उपयोगिता, डॉ. संगीता सिंह पृष्ठ क्र 33,

3 संवादिनी (हारमोनियम), जयंत भालोदकर, पृष्ठ क्र. 18

4 हारमोनियम विविध आयाम, डॉ. विनय कुमार मिश्र, पृष्ठ क्र 30

5 श्रुति, डॉ. विद्याधर ओक, पृष्ठ क्र. 51